संगठन मंत्र

सहकार भारती कार्यक्रमों के शुरू में (आरम्भ) उच्चारण हेतु वेद ऋचा ।

1) सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते ।।

Sam Gachchhadhwam Sam Vadadhwam, Sam wo
Manansi Janatam; Dewa Bhagam Yatha Poorve,
Samjanana Upasate.

Meet together, talk together, let your minds apprehend alike,
in the manner as the ancient Gods concurring accepted
their portion of Sacrifice.

प्रेम से मिलकर चलो, बोलो, सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भाँति तुम, कर्तव्य के मानी बनो ।।
हे मनुष्यो! तुम एक सी गति में चलो। वाणी तुम्हारी, एक बात को कहनेवाली हो।
तुम्हारे मन भी एक हो। पूर्व के विज्ञान, इसी प्रकार ज्ञानी होते हुये,
अपनी अधिकारों को प्राप्त करते थे।

2) समानो मन्त्रः समितिः, समानं मनः सहचित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।

Samano Mantrah Samitih Samani Samanam Manah saha
Chittamesham,
Samanam Mantramabhimantraye wah samanena wo Havisha
Juhomi.

Common be the prayer of these (assembled worshippers) Common
be the acquirement, Common be the purpose, Associated be the
desire I repeat for you.
Common prayer I offer for you a common oblation.

हों विचार समान सबके, चित मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों।।
हे मनुष्यों! एक समान ज्ञान उपार्जन करो! समानता के साथ एक दुसरे से मिलो।
अपने मनके संस्कारों को समान करो। पूर्वजों ने भी इसी प्रकार से एक
साथ रह कर संगठन बनाया था।

3) समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।

Samanee Wa Akootih Samana Hrudayani wah
Samanamastu Wo Mano Yatha Wah Susahasati
Common (Worshippers) be your hearts,
Common be your thoughts, so that there may be
thorough Union.

हो सभी के चित्त, मन, संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से, जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।।
तुम्हारी भावनायें और संकल्प समान हो। तुम्हारे हृदय समान रहें।
तुम्हारे मन समान रहने से सभी परस्पर सहाय्य कर सकेंगे ।
ऋचा - ऋग्वेद 10/191/4 (Rugveda) 10/191.4
।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

समापन मंत्र

सहकार भारती के कार्यक्रमों के समापन पर उच्चारण हेतु ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरायमा।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग भवेत् ।
सभी सुखी हो, सभी व्याधिमुक्त हो,
सभी का भला देखो । कोई भी दुखी न हो।